

भगत नामदेव – सबद ६०

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥

रागु प्रभाती, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, १३५१

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥

सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ १ ॥

गोबिंदु गाजै सबदु बाजै ॥

आनद रूपी मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥

सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥ २ ॥

तुम्म चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला ॥

तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥ ३ ॥ २ ॥

सार: प्रकृति के मूल नियम समय की सीधी रेखा से अलग हैं, वह ऐसे अनंत क्रम में मौजूद हैं जो अतीत, वर्तमान और भविष्य की सीमाओं से आगे है। उनका सार्वभौमिक प्रभाव बिना किसी रुकावट के अस्तित्व के हर पहलू को सहारा देता है और रूपों व पहचानों के बदलते प्रवाह के बीच भी स्थिर रहता है। इस छिपी सच्चाई को समझने से हम क्षणभंगुर चीज़ों में स्थायीत्व की व्यर्थ खोज छोड़ पाते हैं। मन ध्यान भटकाने वाली चीज़ों से मुक्त होकर हमारे भीतर और आस-पास मौजूद उस शाश्वत उपस्थिति के प्रति जागृत होता है जो हमें जीवन को उसकी पूरी गहराई और समृद्धि के साथ जीने के लिए प्रेरित करती है।

आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥

आरंभ से ही, अलग-अलग युगों और कालों में इसकी कोई सीमा नहीं जानी जा सकी है। यह बताता है कि प्रकृति और चेतना के मूल नियम एक सीधी रेखा में चलने वाले समय की सीमाओं से अलग काम करते हैं और इनका दायरा अनंत है।

सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ १ ॥

सर्वव्यापी चेतना निरंतर सबमें व्याप्त है, इसी तरह इसकी मौजूदगी और रूप का वर्णन किया जाता है। इससे यह बोध होता है कि अस्तित्व का मूल स्रोत कोई दूर स्थित वस्तु या सत्ता नहीं है, बल्कि वह समस्त जीवन का निरंतर विद्यमान आधार है। (१)

गोबिंदु गाजै सबदु बाजै ॥

ब्रह्मांडीय ऊर्जा गहराई से गूंजती है और ज्ञान की बातें भीतर प्रतिध्वनित होती हैं। यह रूपक उस आंतरिक अनुभव का वर्णन करता है जो जागरूकता के विकसित होने पर उत्पन्न होता है जब मन ब्रह्मांडीय व्यवस्था की लय और प्रवाह को अनुभव करने लगता है।

आनद रूपी मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मेरी सर्वव्यापी चेतना आनंद का स्वरूप है। यह रेखांकित करता है कि चेतना की शांत प्रकृति का अनुभव संतोष और कृतज्ञता के माध्यम से किया जा सकता है। (१)(विराम)

बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥

चंदन की सुगंध आसपास की वनस्पति में व्याप्त होकर शांति लाती है। यह प्रतीक है कि कैसे एक ही प्रबुद्ध अंतर्दृष्टि या आत्म-साक्षात्कार की स्थिति मन के महत्त्वहीन विचारों को बदल देती है।

सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥ २ ॥

हर चीज़ में चंदन की मूल सुगंध व्याप्त है। यह हमारे परिवेश की संक्रामक प्रकृति को दर्शाता है, हम उसी के अनुसार विचारों और कार्यों को अपनाते हैं। (२)

तुम्म चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला ॥

आप पारस पत्थर हैं और मैं लोहा हूँ, आपके संपर्क से मैं सोना बन गया हूँ। यह आंतरिक स्वयं के साथ जुड़ाव के माध्यम से कठोर, प्रतिक्रियाशील अहंकार के शुद्ध, परिष्कृत चेतना में मनोवैज्ञानिक परिवर्तन का वर्णन करने के लिए कीमियाई रूपक का उपयोग करता है।

तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥३॥२॥

आप दयालु, बहुमूल्य रत्न हैं, नामदेव इस वास्तविकता में विलीन हो जाते हैं। यह आत्म-अनुग्रह को आत्म-साक्षात्कार में लीन होने के रूप में इंगित करता है जो सत्य और एकता के साथ मिलन को बढ़ावा देता है। (३)(२)

तत्त्व: भगत नामदेव, आंतरिक रूपांतरण की बात करते हैं जो आत्म-सुधार से कहीं आगे है। यह केवल अपने व्यवहार या व्यक्तित्व को बेहतर बनाने का प्रयास नहीं है बल्कि हमारी आंतरिक प्रकृति में होने वाला गहरा परिवर्तन है। आत्म-कृपा, वह खुलापन है जो आत्म-साक्षात्कार को सच्चे अनुभव में बदलता है। यह हमारे भीतर से ही पैदा होता है और हमें बिना किसी विरोध के सच को अपनाने में मदद करता है। जैसे-जैसे जागरूकता बढ़ती है, अलगाव का भाव समाप्त होने लगता है और मन एकत्व की सच्चाई का आभास करने लगता है। इस अवस्था में, सच ही हमारे सोचने, प्रेम करने और जीने का आधार बन जाता है। इस तरह, आत्म-कृपा धीरे-धीरे मानवीय आत्मा को उसके मूल स्वरूप के साथ सामंजस्य बिठाने और सभी के परस्पर जुड़ाव को समझने की ओर ले जाती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com